जैन धर्म

→ जैन शब्द का अर्थ → विजेता अर्थात इंद्रियों को जीतने वाला
→ जैन धर्म के इतिहास का स्रोत - भगवतीसूत्र, कल्पसूत्र परिशिष्टपर्वन
→ जैन धर्म में तीर्थंकरों की संख्या → 24.
प्रथम → ① ऋषभदेव ② अजितनाथ ③ सम्भवनाथ ④ अभिनन्दन ⑤ सुमतिनाथ
⑥ पद्मप्रभु ⑦ सुपार्श्वनाथ ⑧ चन्द्रप्रभ ⑨ पुष्पदंतनाथ ⑩ शीतलनाथ
⑪ श्रेयांसनाथ ⑫ वासुपूज्य ⑬ विमलनाथ ⑭ अनन्तनाथ ⑮ धर्मनाथ
⑯ शांतिनाथ ⑰ कुन्थुनाथ ⑱ अरनाथ ⑲ मल्लिकनाथ ⑳ मुनिसुव्रत
㉑ नेमिनाथ ㉒ अरिष्टनेमी ㉓ पार्श्वनाथ ㉔ महावीर स्वामी ← अंतिम
→ ऋग्वेद में किन दो तीर्थंकरों का उल्लेख है → ऋषभदेव, अरिष्टनेमि का
इनका प्रतीक चिह्न है सांड एवं हाथी
→ पार्श्वनाथ का प्रतीक चिह्न → सांप, महावीर स्वामी का प्रतीक चिह्न → सिंह
→ किस पुराण में ऋषभदेव को विष्णु का अवतार माना गया → भागवतपुराण
→ 22 वें तीर्थंकर अरिष्टनेमी को वासुदेव कृष्ण का भाई बताया गया
→ ऋषभदेव का जन्म - अयोध्या, मृत्यु - अष्टापद (कैलाश पर्वत)
→ पार्श्वनाथ के पिता काशी नरेश अश्वसेन के पुत्र थे तथा माता का नाम वामादेवी
→ पार्श्वनाथ ने 30 वर्ष की आयु में सन्यास ले लिया और सम्मेदपर्वत (झारखण्ड)
पर कठोर तपस्या करते हुए 84 वें दिन कैवल्य की प्राप्ति की
→ पार्श्वनाथ को महावीर से 250 साल पहले निर्वाण प्राप्त हुआ।
→ पार्श्वनाथ की प्रथम अनुयायी उनकी माता वामा तथा पत्नी प्रभावती थी
→ पार्श्वनाथ ने 4 महाव्रतों का प्रतिपादन किया - अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, अस्तेय

महावीर स्वामी

जन्म → 540 वर्ष ईसा पूर्व वैशाली के निकट कुण्डलग्राम
बचपन का नाम - वर्धमान, पिता - सिद्धार्थ, माता त्रिशला
पत्नी - यशोदा पुत्री - अणोज्जा (प्रियदर्शना) दामाद - जमालि
गृह त्याग - 30 वर्ष की आयु में
→ 42 वर्ष की आयु में महावीर को भूम्भिका ग्राम के समीप ऋजुपालिका
नदी के किनारे एक साल वृक्ष के नीचे कैवल्य (ज्ञान) की प्राप्ति हुई
जिसके बाद महावीर जिन (विजेता) कैवलिन अर्ह (योग्य) निर्ग्रंथ (बंधन रहित जैसे उपनाम मिले।

प्रथम उपदेश → राजगृह के विपुलाचल पर्वत
जैन धर्म का प्रमुख केन्द्र था - मथुरा।
महावीर को निर्वाण प्राप्त हुआ - 72 वर्ष की आयु में 468 ई.पू. पावापुरी मल्लराजा सस्तिपाल के राजप्रासाद में
महावीर ने पाँचवा व्रत जोड़ा - ब्रह्मचर्य
त्रिरत्न ① सम्यक श्रद्धा - सत् में विश्वास
② सम्यक् ज्ञान - सत् का ज्ञान
③ सम्यक् आचरण सच्चरित्रता एवं सदाचार का पालन
किस विद्वान हेतु चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपना शरीर त्यागा। सल्लेखना
चन्द्रगुप्त मौर्य ने शरीर त्यागा श्रवणबेलगोला (मैसूर) में भद्रबाहु के साथ
जैन धर्म में ज्ञान
① मति ② श्रुति ③ अवधि ④ मनः पर्याय ⑤ केवल
जैन धर्म कितने सम्प्रदाय में बंट गया - 2
भद्रबाहु के नेतृत्व वाला दिगम्बर (दक्षिणी जैन) (नग्न)
स्थूलभद्र के नेतृत्व वाला श्वेताम्बर - (श्वेत वस्त्र धारी) मगध
5 महाव्रत → ① अहिंसा ② सत्य ③ अस्तेय ④ ब्रह्मचर्य ⑤ अपरिग्रह
तीन गुणव्रत - ① दिग्विरति ② अनर्थ-दण्डविरति ③ उपभोग-परिभोग परिमाण व्रत
चार शिक्षाव्रत - ① देशविरति ② सामायिक व्रत
③ प्रोषधोपवास व्रत ④ अतिथि संविभाग व्रत
18 पाप → ① प्राणातिपात हिंसा ② असत्य ③ मैथुन ④ चोरी ⑤ परिग्रह ⑥ क्रोध ⑦ मान ⑧ माया ⑨ लोभ ⑩ राग ⑪ द्वेष ⑫ कलह ⑬ दोषारोपण ⑭ चुगली ⑮ असंयमित रति ⑯ निंदा ⑰ कपटपूर्ण झूठ ⑱ मिथ्या दर्शन रूपी शल्य
जैन साहित्य को कहा जाता है - आगम
- 12 अंग, 12 उपांग, 10 प्रकीर्ण 6 छेदसूत्र 4 मूलसूत्र

प्रथम जैन संगीति	द्वितीय जैन संगीति
समय - 322 - 298 ई.पू.	समय - 512 ई.
स्थल - पाटलिपुत्र	स्थल - वलभी
अध्यक्ष - स्थूलभद्र	अध्यक्ष - देवर्धिगणि
शासक - चन्द्रगुप्त मौर्य	